9.कर्णवेध

कर्णवेधो वर्षे तृतीये पँचमे वा-पा. गृह्यसूत्र १/१७-यह सँस्कार आमतौर पर तीसरे अथवा पाँचवे वर्ष में किया जाना प्रामाणित है । कान या नाक छेदने का यह उपयुक्त समय है । इस समय तक इन अँगों का छेदव्य स्थान अनुकूल हो जाता है । यह सँस्कार भी लिँग-भेद के दायरे में नहीं है । वालक हो या वालिका दोनों के लिये समान रुप से स्वीकृत है । यह अलग बात है कि आजकल केवल लड़कियाँ ही नाक-कान छिदवाती हैं । पुराने काल में लड़कों के लिये भी यह काफी प्रचलन था जो प्रमाण के अनुकूल था पर आज इसका लड़कों के लिये कम हो गया है । कहीं-कहीं आज भी लड़कों के लिये कान में कुँडल डालने का रिवाज है । कान के कुँडल तो श्री राम तथा श्री कृष्ण जी के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध है कि उनके कर्ण-कुँडल अत्यन्त शोभायमान होते थे ।

यद्यपि पुराने शास्त्रों में नासिका-वेध नहीं लिखा है तथापि नारियों के नाक-छेदन को समझते हुये महर्षि दयानन्द ने इसी सँस्कार के अन्तर्गत् नासिका-वेध को भी स्वीकारा है । प्राय: नारियाँ कान और नाक दोनों में आभूषण डालती हैं । ऐसा स्वीकार कर इन्होंने नारी का सम्मान बढ़ाया है । "कर्णवेधो वर्षे तृतीये पँचमे वा" इस पारस्कर गृहसूत्रीय प्रमाण का अर्थ महर्षि ने इस प्रकार किया-"कर्ण वा नासिका के वेध का समय जन्म के तीसरे या पाँचवें वर्ष का है" देखें -सँ.वि. द्वितीय सँस्करण-कर्ण-वेध सँस्कार-प्रकरण । अत: हमें इसे स्वीकारने में कोई आपत्ति नहीं है । यह तो केवल अलँकार धारण करने हेतु है जो बालक वा बालिका दोनों को समान अधिकार है: अपनी मनपसन्द वे चाहे नाक-कान जो भी वेधवाना चाहें: इसमें कोई आपत्ति नहीं है ।

सँस्कार के दिन- जिस दिन कर्ण वा नासिका वेधन की क्रिया करनी है, वच्चे को स्नान करा शुद्ध वस्त्रालँकार धारण करावें और यज्ञशाला में लाकर विधिवत् सँस्कार करें । वच्चे को वेधन-काल में उसका मन रिझाये रखने के लिये कुछ अच्छी चीज खाने के लिये और खेलने के लिये कोई आकर्षक खेलौना भी दें ।

सँस्कार-प्रयोजन- "रक्षाभूषणनिमित्तं बालस्य कर्णौ बिध्येते"-सुश्रुत-सूत्रस्थान-१६/१ अर्थात् रक्षा तथा आभूषण के लिये यह सँस्कार है । दोनों कान या नासिका वेध इन दो कारणों से ही किया जाता है । रक्षा या आभूषण । यह व्यवहार लड़का या लड़की दोनों पर लागू होता है । लड़कियाँ नाक-कान दोनों में आभूषण डालती हैं पर लड़के कहीं-कहीं केवल कान में ही कुँडल डालते हैं । रक्षा तो दोनों के वेधन में है । वस्तुत: कर्ण वेध से एक ऐसा नस का वेधन होता है जिसका सम्बन्ध आन्त्रवृद्धि (हरनिया) दोष को रोकने में सहायक है । इससे अँड-वृद्धि दोष

भी नष्ट होता है । इस प्रकार पुँसत्व नष्ट करने वाले रोगों से रक्षा होती है क्योंकि कर्णेन्द्रियों का सम्बन्ध सीधा वीर्यवाहिनी नाड़ियों से है । इसके लिये कुशल वैद्य या अनुभवी सुनार की आवश्यकता है जो कर्ण वा नासिका वेधन में प्रवीण हो; जिसे अच्छी तरह कर्ण या नासिका स्थानीय नसों का सम्यग् ज्ञान हो, वही इस कार्य को करने का सही अधिकारी है । निम्न यजुर्वेदीय मन्त्रों को पढ़कर विद्वान् आचार्य के पौरोहित्य में और कुशल वैद्य या अनुभवी सुनार से वेधन-कार्य करावें । ये मंत्र इस प्रकार हैं ।

ओ३म् भद्रं कर्णेभि:श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा: । स्थिरैरँगैस्तुष्टुवाँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदाहु: ॥ यजु. २५/२१ -

इससे दायाँ कर्ण या नासिका वेधें । और

ओ३म् वक्ष्यन्ती वेदागनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाता । योषैव शिँक्ते वितताधि धन्वँज्या इयं समने पारयन्ति ॥ यजु. २९/४०

इससे बायाँ कर्ण या नासिका वेधें । वही कुशल वैद्य उन छिद्रों में शलाका डाल दे और उचित औषधि लगा दे कि वे छिद्र पके नहीं; शीघ्र अच्छे हो जाये । यहाँ ऋषि कश्यप के ये दो श्लोक भी यही पुष्ट करते हैं कि योग्य वैद्य का चयन बहुत आवश्यक है वरणा वेधित कर्ण वा नासिका में पाक आने से घाव बनने का डर बना रहेगा । ऋषि कश्यप के सन्दर्भित श्लोक इस प्रकार हैं-

१. कदा वेध्यं कथं वेध्यं कुत्र वेध्यं कथं व्यध: । हितोऽहितोऽत्य: कश्च तत्राज्ञ: किं प्रपत्स्यते ॥

भावार्थ- नाक या कान कब, कैसे, कहाँ वींधें, इसका हानि-लाभ क्या है, यह सब एक कुशल वैद्य ही समझेगा । कोई अज्ञानी क्या समझेगा ?

२. तस्माद् भिषक् सकुशल: कर्णं विध्येत् विचक्षण: ।
शिशो: हर्षप्रमत्तस्य धर्मकामार्थसिद्धये ॥

भावार्थ- इस कारण इस कार्य को करने हेतु कुशल वैद्य ही चुने अथवा कोई अनुभवी सुनार जो वेधव्य स्थानों के नसों को अच्छी तरह जानता हो और लगाने वाली आवश्यक औषधि को जानता तथा साथ रखता भी हो । इस श्लोक का अन्तिम चरण का भाव संतान पर बहुत ही

उत्तम सँस्कार डालता है । उसकी प्रसन्नता, स्वास्थ्य और जीवन भर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के मार्ग पर चलता रहे ।

सँस्कार गत् पठनीय प्रस्तुत यजुर्वेदीय मंत्रों का भाव भी हमें जानना चाहिये । कानों से भद्र सुनें, कानों में प्रियता यानि मिठास भरें, आँखें वस में रहकर भद्र देखें, इस प्रकार सारे अँग स्वस्थ रह अच्छी तरह कार्य करें और सदैव देवहित में ही सक्रिय रहें । इस प्रकार संतान पर उत्तम व्यावहारिक सँस्कार डालते हुये उन्हें उत्तम चरित्र का स्वामी बनाना उद्देश्य है । भविष्य में वे कामाशक्ति पर काबू रख अँडवृद्धि आदि दोष से बचकर निरोग रहें -ऐसा प्रस्तुत यजुर्वेदीय दूसरे मंत्र का अभिप्राय है ।

Karn-vedha ka Manta –vidhi bhaaga